

Vol - 06/ January 2016

ISSN 2321 5054

History Times

A Peer Reviewed Research Journal of History & Archaeology

Editors

Prof. Naveen Gideon

Prof. B. K. Shrivastava



Bundelkhand Itihas Parishad Evam Shodh Sansthan, Sagar (M.P.)

Regd. No. 06/09/01/09369/12

सागर नगर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ

डॉ. बी. के. श्रीवास्तव

प्राध्यापक - इतिहास विभाग

डा. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सागर में 1857 की क्रांति के दमनकर्ता ब्रिगेडियर जनरल ह्यूरोज ने स्वयं सागर के महत्व को रेखांकित करते हुये लिखा था कि - 'सागर का जबलपुर से अधिक महत्व है। सेन्दल इंडिया की तो यह आयुध शाला ही है जहां शस्त्रादि बनाये जाते हैं तथा यहीं से प्रदाय किये जाते हैं। यही नहीं सागर की स्थिति ऐसी है कि वह मध्य में है तथा पश्चिम से उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण भारत के लिये संचार साधनों का यह माध्यम है।' अंग्रेज हजारों किलोमीटर दूर से भारत आये। समस्त भारत में उन्हें सागर भौगोलिक, प्राकृतिक एवं सामरिक दृष्टि से अच्छा लगा इसका सबूत है बुन्देलखण्ड में 1857 की क्रान्ति के दमनकर्ता ब्रिगेडियर जनरल ह्यूरोज का यह कथन। इस क्षेत्र की जलवायु भी अंग्रेजों को अच्छी लगी थी। उन्होंने देखा कि अच्छी जलवायु होने के कारण यहाँ पशु तन्दुरस्त हैं। अंग्रेज वस्तुतः भारत आये थे, भारत के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने। भारत का बहुविध शोषण करने। सागर क्षेत्र की जलवायु एवं यहाँ पशुओं की बहुतायत का लाभ उठाने उन्होंने सागर के पास रतौना में कारखाना खोलने की योजना बनाई। यहाँ 1400 गाय-बैल प्रतिदिन काटे जाने थे। उनका डब्बा बन्द गो मॉस पश्चिमी देशों में निर्यात किया जाना था। भाइ अब्दुलगनी के जमीनी आन्दोलन एवं पं. माखन लाल चतुर्वेदी के पत्रकारिता आन्दोलन के कारण अंग्रेजों को रतौना कारखाना खोलने की योजना त्यागना पड़ी। अखिल भारतीय स्तर पर अंग्रेजों को पहली शिकस्त यहाँ सागर में ही मिली। जहाँ कारखाना खुलना था वहाँ रतौना गाँव में आज गौशाला खुल गई है।

इस तरह सागर प्रारंभ काल से ही एक गौरवशाली इतिहास को अपने में समेटे हुये है। भारत ही नहीं विश्व के जितने भी पर्यटन स्थल है, वहाँ का सर्वेक्षण करें तो हम पाते हैं कि पर्यटक हर स्थान का इतिहास जानने के आकांक्षी रहते हैं। कहीं कहीं तो पर्यटक उन्हीं स्थलों को अपने पर्यटन दूर में शामिल करते है जो कि ऐतिहासिक महत्व के हों। पर्यटन स्थलों पर गाइड भी हमेशा उस स्थान विशेष का इतिहास ही बताते हैं।

पर्यटन आज एक बड़ा उद्योग बन चुका है। भारत की आय का एक बड़ा भाग पर्यटन द्वारा ही प्राप्त होता है। विदेशी मुद्रा भारत लाने का पर्यटन सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर केन्द्र एवं राज्य सरकारों पर्यटन विकास को विशेष महत्व दे रही हैं। पर्यटन के बढ़ते महत्व को देखते हुए विश्वविद्यालय स्तर पर पर्यटन से संबंधित डिग्री एवं डिप्लोमा कोर्स भी तेजी से लागू किये जा रहे हैं। पर्यटन में इतिहास की उपयोगिता को देखते हुये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के इतिहास विषय के माडल स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 'पर्यटन में इतिहास को अनुप्रयोग' शीर्षक से एक एच्छिक प्रश्नपत्र भी शामिल किया है। प्रायः प्रत्येक विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में यह प्रश्न पत्र पढ़ाया जा रहा है।